Paper I

1.

बिहारी का मुक्तक सौन्दर्य

उत्तर → बिहारी मुक्तक काव्य के रचयिता हैं। मुक्तक काव्य की सारी क्षमताएं बिहारी के दोहों में मौजूद हैं। जितना रख्याति प्रबन्ध काव्य में तुलसीदास रचित रामचरितमानस को मिली है उतना ही रख्याति बिहारी लाल को मिली है। उतनी ही रख्याति बिहारी की मुक्तक काव्य की रचना में बिहारी की सतसई का स्थान है।

मुक्तक काव्य में जिन गुणों को होना चाहिए उन सब का चरम विकास बिहारी के दोहों में दिखाई पड़ते हैं। बिहारी की मुक्तक शैली की प्रशंसा में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है —

" जिस कवि में कल्पना के समाहार शक्ति के साथ साथ भाषा की समास शक्ति जितनी ही अधिक होगी उतना ही वह मुक्तक की रचना में सफल होगा वह क्षमता बिहारी में पूर्ण रूप से वर्तमान थी इसी से वे दोहे ऐसे छोटे छन्द में इतना रस भर सके हैं उनके दोहे क्या हैं? रस के छोटे छोटे छीटे हैं।

डॉ० रमाशंकर तिवारी के शब्दों में —

" शिल्पी की जो सजीवता शैली की जो सजावट कथन की जो व्यवस्था रचना, काव्य गुणों की जो मनोरम योजना ध्वनि की जो निपुणता, साधना तथा चित्रों की जो मनमोहक अवतारणा सतसई में सम्भव हुई है वह श्रृंगार शिरोमणि बिहारी को हिन्दी मुक्तक परम्परा की दीप्तिमयी मालिका का महामणि बनाने में सर्वथा सर्वमान्य है।"

बिहारी का काव्य भाव पक्ष जितना परिपूर्ण है कला पक्ष उससे भी अधिक प्रौढ़ और परिमार्जित है। राधाचरण गोस्वामी के शब्दों में — " बिहारी के काव्य में अनुभूति और अभिव्यक्ति पक्ष में सौन्दर्य से विस्मय विमुग्ध होकर उन्हें सूर तुलसी के भाव से भी उच्च स्थान दिया गया है। यथा

सूर सूर है तुलसी शशि उडुगन केशवदास।

जा।

इसी उक्ति के समान आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कहा है कि अगर सूर सूर है तुलसी शशि है तो बिहारी भी पीयूषवर्षी मेघ है जिनके आने पर सभी लोग छिप छिप जाते हैं जिस तरह की आकाश मंडल में छाने बादलों के छा जाने पर सूर्य और चन्द्रमा छिप जाते हैं इसी प्रकार बिहारी के दोहे पढ़ने या उनके गूढ़ अर्थों को समझने पर सभी कवियों की लेखनी तुच्छ जैसा महसूस होने लगती है।

एक दोहे से दोहे जैसे छन्द में विपुल भावों को भरकर तथा अनूठे सरस चित्रों सजाकर बिहारी ने उन्हें ऐसा मर्मस्पर्शी बना दिया है जिससे उनकी उत्कृष्ट कारीगरी का पता चलता है। बिहारी के दोहे या मानव हाथी के दाँत पर की गई कारीगरी समान उत्कृष्ट एवं कलात्मक है। बिहारी के कल्पना की उड़ान बहुत ऊँची है। ये दूर की कौड़ी फेंकने वाले कवि कहे जाते हैं उनके अनेक दोहे अन्योक्तिपरक हैं। बिहारी अन्योक्ति के केवल बात ही नहीं करते एक ही शब्द से ये अनेक भाव प्रदर्शित करते हैं। बिहारी में भाषा की मिठास भावों की गहराई और चित्रण की

...मानता है।

निश्चय ही बिहारी एक रस सिद्ध कवि थे। की भाव व्यंजना, भक्ति, नीति, चमत्कार, रसात्मकता आदि गुणों से आलोकित उनका काव्य सहृदयों को सहज ही अपनी आकर्षण धारा में बाँधे होता है। बिहारी की काव्य सौन्दर्य पर प्रकाश डालने के लिए उनकी समीक्षा इस प्रकार की जा सकती है—

बिहारी की काव्य मुख्यतः श्रृंगार भाव पर आधारित है। इसे तीन वर्गों में विभक्त किया जा सकता है— श्रृंगार, भक्ति और नीति। इन तीन पक्षों में बिहारी के कौशल का परिचय मिलता है। श्रृंगार की अनुभव विभाव और संचारियों का सफल चित्रण बिहारी के काव्य में हुआ है।

श्रृंगार रस में पूर्ण रूप से डूबकर बिहारी ने अपने दोहों की रचना की है। इसमें तन्मयता है इसलिए पाठकों को भी रस विभोर कर देती है। बिहारी के काव्य सौष्ठव पर प्रकाश डालते समय उसकी निम्नलिखित विशेषताओं का उल्लेख आवश्यक है—

संयोगशृंगार

वस्तु चयन ——→ बिहारी की अधिकांश दोहे का श्रृंगार सम्बन्धी होना ही है। श्रृंगार रस की चित्रण में इनकी बुद्धि अत्यधिक रमी है। अनेक दोहों में भक्ति का भी पुट है।

वस्तुतः रीति युगीन कवियों के लिए "राधिका कन्हाई सुमिरन को बहानो है"।

A

नायिका को नायक से इतना प्रेम है कि उसे प्रति
से अलग रखना नहीं चाहती है।

रीतिकाल के कवियों की अधिक दृष्टि संयोग श्रृंगार पर ही रही है। वियोग पर अपेक्षाकृत कम। बिहारी कवि भी वियोग की अपेक्षा संयोग श्रृंगार पर ही अधिक ध्यान दिये है।

कल्पना की समाहार शक्ति

बिहारी ने अपने दोहे में एक अद्भुत कल्पना का समावेश किया है। वही बिहारी सतसई का आनंद ले सकता है।

अन बूड़े-बूड़े तीरे जो बूड़े सब अंग।

अर्थात जो बिहारी सतसई का वही आनन्द ले सकता है जो कि पूरी रूप से उसमें डूब जायेगा जो उसके गहराई तक पहुँचेगा उसके वास्तविकता को पकड़ेगा।

कहत नटत रीझत खीझत मिलत खिलत लजियात
भरे भवन में करत हैं नैनन ही सों बात।।

बिहारी इस प्रसंग में गूढ़ कल्पना का समावेश है नायिका अपने नायक से भरे परिवार में आँख के इशारा से ही मिल लेती है। डॉ० श्याम सुन्दर दास ने सतसई सतक की भूमि में तीन ऐसे अनुक साहानो का उल्लेख किया जिससे सूचित में पाठक को चमत्कृत करने की क्षमता आ जाती है। वे है विधत पाणि

दोहा —

विभिन्न शास्त्रों —

बिहारी विभिन्न शास्त्रों के ज्ञाता थे — जैसे दर्शन शास्त्र विज्ञान ज्योतिष शास्त्र इत्यादि।

बिहारी सतसई एक श्रृंगार परक रचना है श्रृंगार रस के ग्रंथो में बिहारी

5

गति बिहारी सतसई को मिली है उतनी किसी अन्य ग्रंथों को नहीं मिली है। इनके दोहे क्या है हिन्दी साहित्य के गरिमा में चार-चाँद लगा देते हैं। एक-एक रत्न के समान है।

वियोग श्रृंगार -

बिहारी के वियोग श्रृंगार की और मार्मिक चित्र और सजीला सा दिखाई पड़ता है। नायक के चले जाने पर अत्यंत विरहणीय दशा चित्रित देखने को मिलता है। कुछ ही क्षणों के बाद नायक नायिका से विलग हो जाता है। नायिका की स्थिति और उनके शरीर इतना दुर्बली पतली हो जाती है कि साँसों के लेने और छोड़ने के साथ-साथ उनका शरीर भी छः सात हाथ पीछे और आगे चला जाता है। जैसे:-

इत आवत चली जात उत चली छः सातक हाथ
चढ़ी हिंडोरे सी रहत रही उसासन साथ॥

ये पढ़ते ही हास्यास्पद बात है लेकिन कवि बिहारी की विरहणी नायिका के अन्तः स्थल तक प्रवेश था।

बिहारी ने एक विरहिणी नायिका का चित्र प्रदर्शित करते हुए कहते हैं कि दुःखी नायिका नायक के विरह में इतना संतप्त हो गई है कि नायक के बार-बार आने की प्रतीक्षा कर रही है। अपने आँखों को लगातार कहती है कि ये आँख ऐसा सामिला है कि प्रिय के आने पर नजर भर देख नहीं सकता और चले जाने पर देखने के लिए व्याकुल हो जाता है ——— जैसे —

इन दुखिया अँखियान को, सुख सिरज्योई नाहिं।
देखे बनैं न देखते, अनदेखे अकुलाहिं॥

कला पक्ष ——→ भाव पक्ष की अपेक्षा कला पक्ष तो अत्यंत ही चरम सीमा पर

1 ~~प्रतुमान~~ है। शृंगार की इस मूल और रस धारा (भाषा) के अतिरिक्त बिहारी ने कुछ दोहे नीति भक्ति वैराग्य, ज्योतिष नाम, समस्या आदि की क्रम में लिखी। इस क्षेत्र में बिहारी अपने शृंगारिक दोहे की अपेक्षा अधिक सफल रहे। शृंगार परक दोहो की व्याप्ति जहाँ रसिक समाज तक ही रहा वही अपनी नीति भक्ति आदि से सम्बद्ध दोहो के चलते भी जनसाधारण की जुबान पर चढ़ पाए

मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ

या

दीरघ साँस न लेहि दुख, सुख साँइहि न भूलि।

या

कनक कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाई ॥

और इन के सम्बन्ध दोहा नीति परक,

अली कली ही सौं बंध्यो आगे कौन हवाल॥

जो शृंगार परक दोहे के पास जाल में बँधकर नहीं रहे हैं बल्कि वे समाज सुधारक रूप भी कहे जा सकते हैं।

कला पक्ष →

भाव पक्ष की अपेक्षा कला पक्ष तो अत्यंत ही चरम सीमा पर पहुँचा है। भाषा और ~~समास~~ शैली समास की शक्ति के ऊपर मुक्तक के काव्य की ~~रचना~~ सम्पूर्ण सफलता निर्भर करती है।

डॉ० रसवीर सिंह ने अपने शब्दों में स्पष्ट किया है भाषा और रीति में समास शक्ति होने पर ही दोहाकार दोहे की रचना में सफल हो सकता है। समासिकता दोहे का एक प्रमुख गुण है। समास जिस प्रकार अपने मूल्य समझने में क्षमता रखता है। भाषा और शैली में भी अधिक मूल्य समझने की क्षमता होनी चाहिए।

कबीर के समान रूप बिहारी को भी

भाषा पर इनका डिक्टेटरशिप है। इनके विषय में कहा गया है ——

सतसैया के दोहरे, ज्यों नावक के तीर।
देखन में छोटन लगे, घाव करे गम्भीर॥

~~छंद~~

छंद ——→ इनके पूरे-पूरे छन्द दोहे हैं जो कि गिनती में सात सौ छब्बीस हैं। 48 मात्राएँ होती हैं जो कि पहले और तीसरे चरण में 13-13 मात्राएँ और दूसरे और चौथे पद में 11-11 मात्राएँ होती हैं।

अलंकार इनके दोहे में अलंकारों का भरमार है। एक ही दोहे में एक ही साथ कई अलंकारों का समावेश दिखाई पड़ता है। जैसे ——

कनक-कनक ते सौ गुनी
मादकता अधिकाय, ~~[illegible]~~
उहि खाये बौराई जग, इहि पाये बौराई॥

बिहारी के दोहों में शुद्ध ब्रज भाषा का उपयोग किया है। जिसमें संस्कृत के तत्सम शब्दों का बाहुल्य है। अरबी फारसी आदि के शब्दों का भी बिहारी ने मुक्त-हस्त प्रयोग किया है। मुहावरों और लोकोक्तियों के प्रयोग से भाषा में जीवन और प्रवहमान हुई है। भाव व्यंजना के दृष्टिकोण से भी कुशलता में बिहारी पीछे नहीं रहे ——

रनित भृंग घंटावली, झरित दान मद नीर।
मंद मंद आवत चल्यौ, कुंजर-कुंज समीर॥

निष्कर्षतः समास पद्धति का चरम उत्कर्ष, भाव गांभीर्य, वचन वक्रता, कल्पना की समाहार शक्ति, स्वाभाविकता, चित्रात्मकता रीतिज्ञान, बहुज्ञता, अनुभव प्रवीण, सूक्ष्म

पर्यवेक्षण भक्ति, काव्य रीतियों का भरपूर ज्ञान रस की मधुर व्यंजना, सुंदर अलंकार योजना एवं भाषा आदि ऐसी विशेषताएँ हैं जिनके कारण बिहारी एक लोकप्रिय कवि बने ||

—×———×———× समाप्त × ——— × ——— × ——— ×

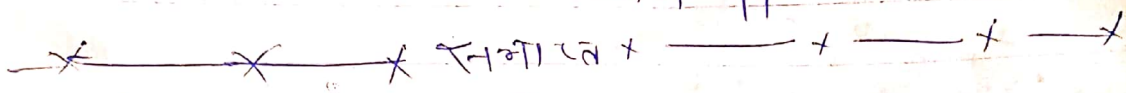

जीवन × बिहारीलाल

महाकवि बिहारीलाल रीतिकाल के सर्वश्रेष्ठ कवियों में एक हैं। इनका जन्म माथुर चौबे कुल में संवत् 1660 ई० में ग्वालियर के समीप गोविन्दपुर नामक ग्राम में हुआ। इनके पिता भगत थे। इस काल में केवल संस्कृत और अंग्रेजी का अच्छा ज्ञान प्राप्त हुआ। कहा जाता है कि जब ये जयपुर नरेश महाराजा जयसिंह के यहाँ पहुँचे तो वे अपनी नई नवेली दुल्हन के साथ विलास कर रहे थे। बहुत की देर तक प्रतीक्षा करने के बाद वे नहीं आये तो बिहारी ने एक दोहा लिखकर उनके पास भेजा —

~~नहिं परागु~~ नहीं

नहीं पराग नहि मधुर मधु नहि विकास इहि काल।
अली कली ही सौ बंध्यो आगे कौन हवाल।।

इस पर महाराज जयसिंह की आँखें खुली और बिहारी की काव्य प्रतिभा पर खुश होकर उन्हें पर्याप्त धन दिया। बिहारी सतसई साहित्य विख्यात है।